आओ हिंदी सीखें -4

(चौथी कक्षा के लिए)

ਸਰਵ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण 2019-20.............. 1,92,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government

लेखिका एवं सम्पादिका

शशि प्रभा जैन

सहयोगकर्त्ता

डॉ॰ नीरू कौड़ा
डॉ॰ सुनील बहल
विनोद शर्मा
हरभजन कौर
इन्द्रजीत कौर
सरोज आर्य

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।
   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਰਵ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8 साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा
मैस: मिकाडो ऑफसैट प्रिंटर्ज़, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए बिना किसी पक्षपात के शिक्षा को अधिक से अधिक लाभदायक बनाना है ताकि बच्चा वयस्क होने तक केवल अक्षर ज्ञान तक ही सीमित होकर न रह जाए बल्कि मानवीय जीवन जैसी ईश्वरीय देन को अधिक सुन्दर और जीने योग्य बनाने में अधिक से अधिक योगदान दे सके। आज हम जिस परिस्थिति में से गुज़र रहे हैं उसमें सही शिक्षा देना और पढ़ना बच्चे और अध्यापक दोनों का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

बोर्ड ने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (द्वितीय भाषा) के प्राइमरी स्तर के पाठ्यक्रमों और पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण करने की योजना बनाई है।

हस्तीय पुस्तक उन विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है जिन्हें पहली भाषा पंजाबी का ज्ञान है तथा वे दूसरी भाषा (हिंदी) का अध्ययन आरम्भ करना चाहते हैं। इसलिए विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हिंदी और पंजाबी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन विस्तृत अध्यापन निर्देशों में दिया गया है। अत: देवनागरी लिपि में हिंदी पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए भाषा वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और आनुवादिक दृष्टि से एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया गया है जो हमारे विद्यालय और घर-बाहर की वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के लिए सहज ग्राह्य, रोचक और उपयोगी है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी भाषा का ज्ञान देने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी, पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

पुस्तक के बारे में

भाषा एक सशक्त माध्यम है जिसके द्‌वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में सम्पर्क भाषा के उद्‌देश्यों को ध्यान में रखकर हिंदी को एक अनिवार्य विषय के रूप में मान्यता दी गई है।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के आधार पर नवीनतम पाठ्‌यक्रम के अनुसार की गई है। पुस्तक में भाषा की चारों अपेक्षित योग्यताओं यथा-सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के सम्यक् विकास का ध्यान रखा गया है।

पाठ्‌य-पुस्तक चौथी कक्षा से हिंदी (द्‌वितीय भाषा) सीखने वाले विद्‌यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक में सबसे पहले विद्‌यार्थियों को अपने परिवेश से संबंधित चित्रात्मक ज्ञान दिया गया है ताकि विद्‌यार्थी निधड़क रूप से बातचीत कर सके। विद्‌यार्थियों में विभिन्न व्यक्तिगत, नैतिक और सामाजिक मूल्यों यथा-आदर, प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, परस्पर मिलजुल कर रहना आदि का विकास करना पाठ्‌य-पुस्तक का मुख्य उद्‌देश्य है।

पुस्तक को हिंदी भाषा के अक्षर ज्ञान से प्रारम्भ कर शब्द ज्ञान एवं वाक्य ज्ञान द्‌वारा अंतिम रूप तक पहुँचाया गया है। हिंदी की मात्राओं का विस्तृत प्रयोग विद्‌यार्थियों को हिंदी पढ़ने और लिखने में सहायक होगा, ऐसी हमारी आशा है। प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में विस्तृत अध्यापन निर्देश पाठ्‌य-पुस्तक की विलक्षणता है।

शशि प्रभा जैन
विषय विशेषज्ञ (हिंदी)

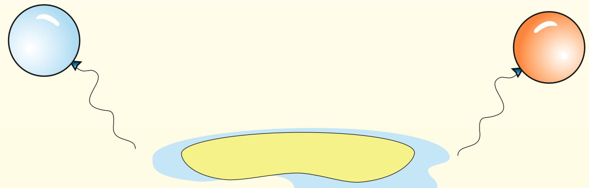

आओ खेलें

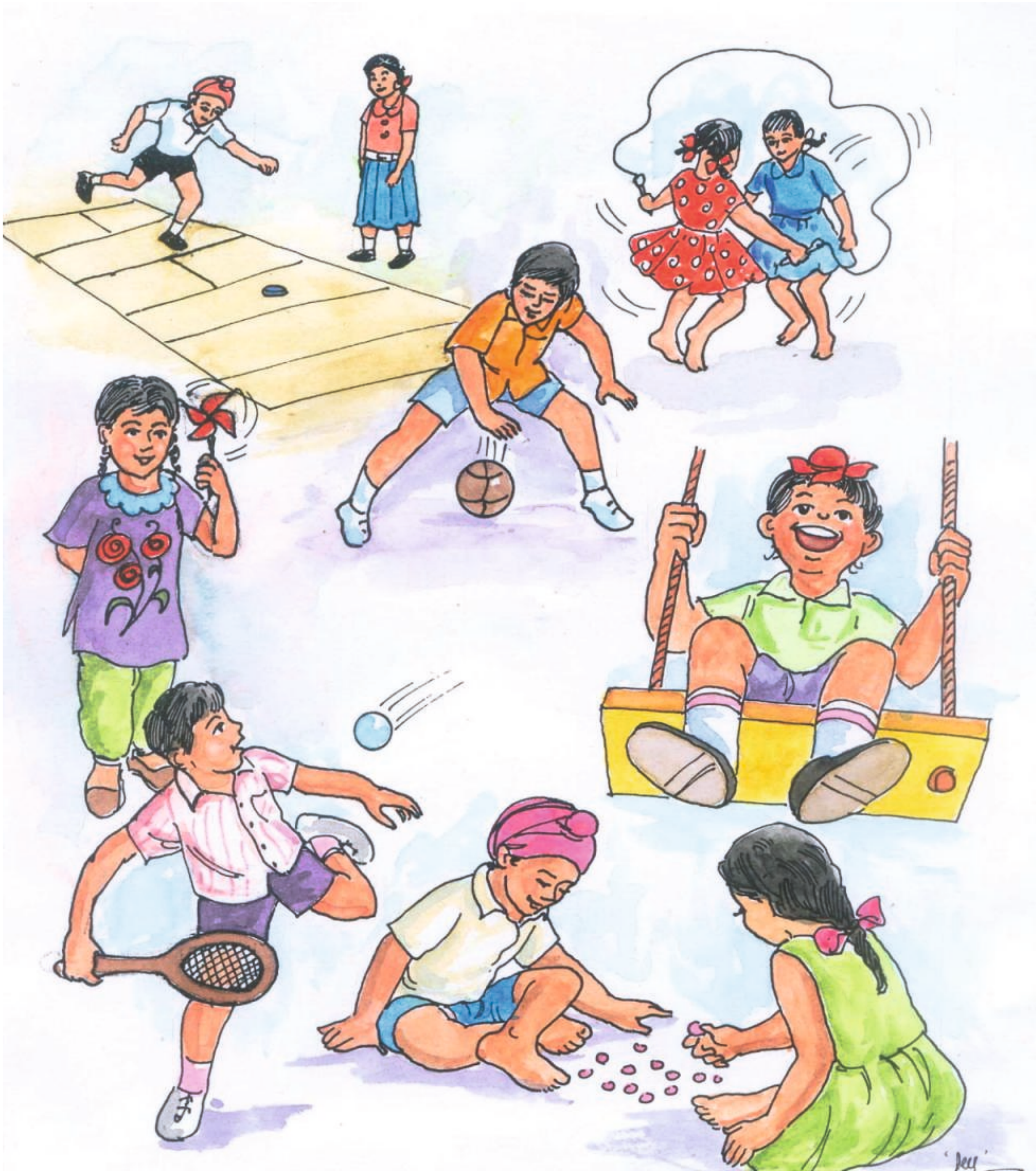

अध्यापन निर्देश : पंजाब के अधिकांश बच्चे ऊपर दिये गये खेलों से परिचित हैं। इसलिये अध्यापक प्रत्येक चित्र की ओर संकेत करते हुए खेल का नाम बताये और उन्हें ये खेल खेलने के लिये प्रेरित करे। उनकी समझने की योग्यता और मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिये खेलों से संबंधित सामान्य प्रश्न पूछे जैसे ऊपर चित्र में दिये गये खेलों में से आपको कौन-सा खेल पसंद है? कौन-सा खेल लड़कियाँ खेल रही हैं? कौन-सा खेल लड़के और लड़कियाँ दोनों खेलते हैं? कौन-से खेल में कौन-से सामान की आवश्यकता पड़ती है, इत्यादि।

इन्हें अपनायें

सुबह जल्दी उठना

शारीरिक अंगों को साफ़ करना

संतुलित भोजन खाना

खाना खाने से पहले और बाद में हाथ-मुँह धोना

अपना आस-पास साफ़ रखना

उचित दूरी पर बैठकर टी.वी. देखना

अध्यापन निर्देश : अध्यापक ऊपर दिये गये चित्रों की सहायता से बच्चों में अच्छी आदतें अपनाने के बारे में चर्चा करे। प्रत्येक चित्र के बारे में बातचीत करते हुए उन्हें उसका महत्व समझाये। इनके अतिरिक्त अन्य अच्छी आदतों के बारे में भी बच्चों को बताये।

इन्हें अपनायें

बड़ों का आदर करना

बड़ों की सहायता करना

छोटे बहन/भाई के साथ प्यार करना

कहानी सुनना

दरवाज़ा खटखटाकर भीतर जाना

धन्यवाद करना

अध्यापन निर्देश : अध्यापक ऊपर दिये गये चित्रों की सहायता से बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करे। नैतिक मूल्यों की नींव घर से ही शुरू होती है, जिस पर बच्चे का पूरा व्यक्तित्व निर्भर करता है।

जीव-जंतु का अनोखा संसार,
चिड़ियाघर में देखा कमाल

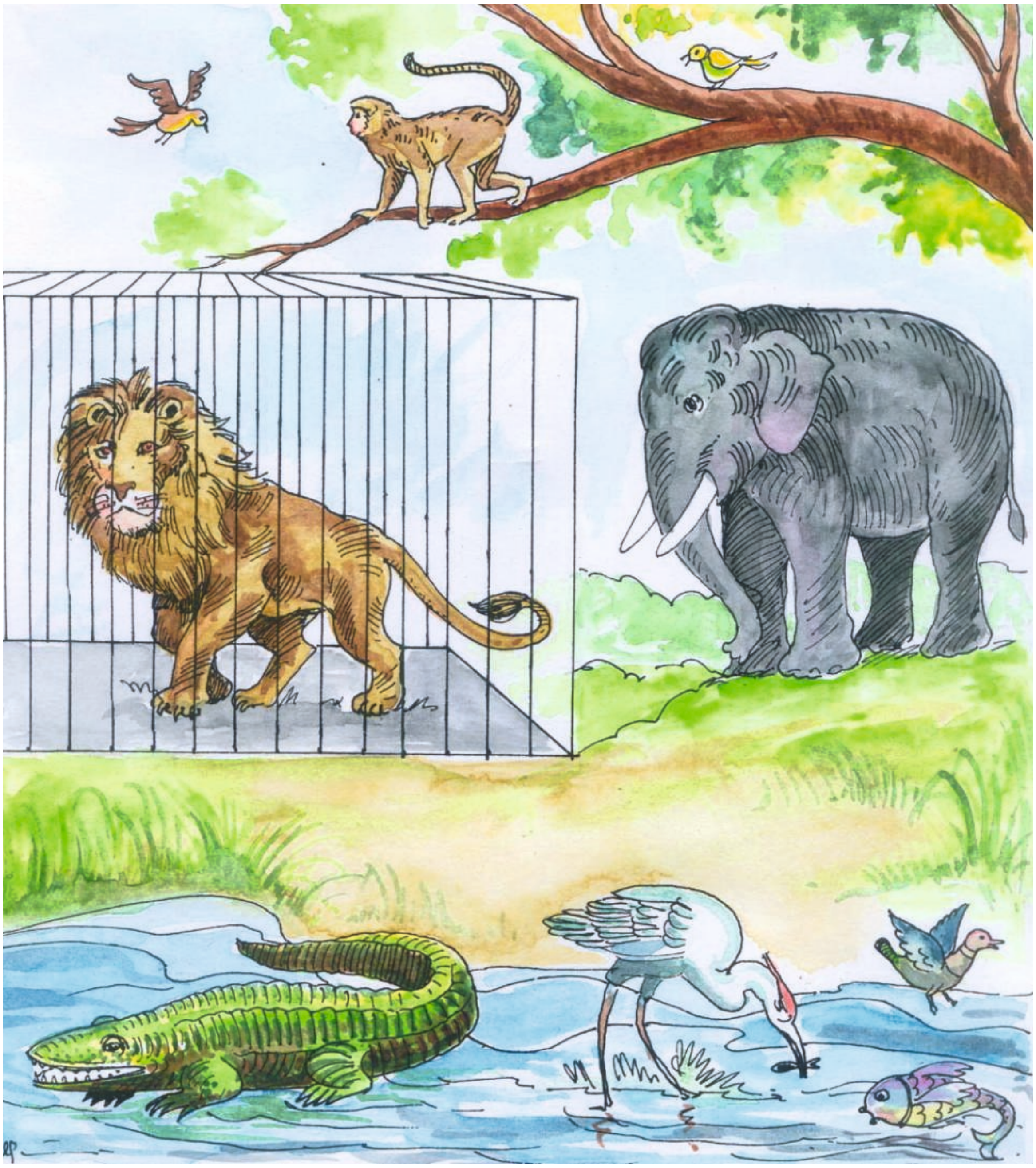

अध्यापन निर्देश : अध्यापक चित्रों की सहायता से चिड़िया घर में मिलने वाले जीव-जंतुओं के बारे में चर्चा करे। जीव-जंतुओं के स्वभाव, आदतों और आवास-स्थान के बारे में बताये। संभव हो तो बच्चों को चिड़ियाघर की सैर करवायी जाये। बच्चे किसी भी जानवर को न सतायें।

इन्हें सब मिलकर मनायें

दशहरा

दीवाली

गुरुपर्व

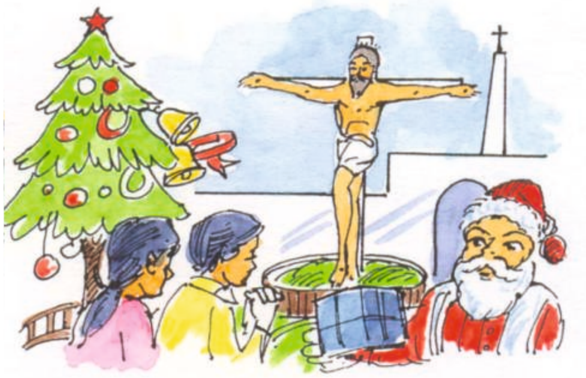

क्रिसमस

ईद

होली

अध्यापन निर्देश : अध्यापक इन चित्रों की ओर संकेत करते हुए बच्चों से पूछे कि उनके घरों में कौन-कौन से त्योहार मनाये जाते हैं? वे उन्हें कैसे मनाते हैं? जो त्योहार उनके घरों में नहीं मनाये जाते उनके बारे में अध्यापक उन्हें जानकारी दे। वह उन्हें समझाये कि हमें सभी त्योहार मिलजुलकर मनाने चाहिए।

आओ गुनगुनायें

नन्हे-मुन्ने

नन्हे-मुन्ने प्यारे-प्यारे,
मात-पिता की आँख के तारे।
हमसे है घर का उजियारा,
खिल उठता है आँगन सारा।
हमें कोई भी मारे न,
हमें कोई भी झिड़के न।
हम हैं फूल गुलाब के,
सच्चे वीर पंजाब के।

तीन बत्तियाँ

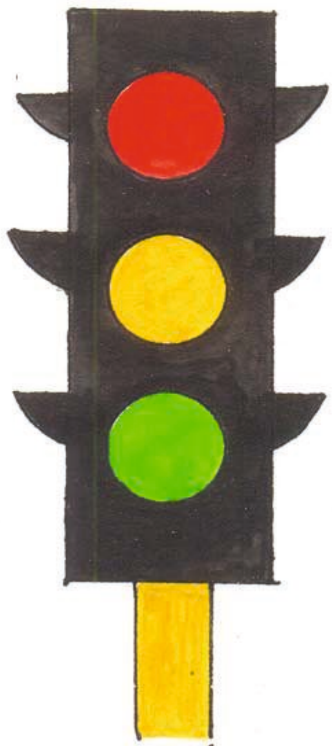

तीन बत्तियाँ हमें बतातीं,
सड़क पर चलना हमें सिखातीं।
लाल बत्ती कहती-रुक जाओ,
कभी न आपस में टकराओ।
पीली बत्ती कहती-हो होशियार,
चलने को सब हों तैयार।
हरी बत्ती कहती-अब तू चल,
आगे-आगे बढ़ता चल।

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों से अभिनय व गीत प्रणाली द्वारा इन कविताओं का सस्वर गायन करवाये।

अपनी रेल

आओ भाई, खेलें खेल,
छुक-छुक करती अपनी रेल।
सीटी देकर चलती रेल,
कैसा है यह बढ़िया खेल।
टिकट-विकट का काम नहीं है,
लगता कुछ भी दाम नहीं है।
स्टेशन आ गया रुक गई रेल,
हुआ खत्म अब अपना खेल।।

हफ़्ते के दिन

सुन लो बच्चो मेरी बात,
हफ़्ते में दिन होते सात।
सोमवार को जाओ स्कूल,
मंगलवार न जाना भूल।
बुधवार को पढ़कर आना,
वीरवार को उसे सुनाना।
शुक्रवार को याद करना,
समय न तुम बर्बाद करना।
शनिवार भी पूरा काम,
रविवार को है विश्राम।

अपना घर

एक चिड़िया के बच्चे चार,
घर से निकले पंख पसार।
पूरब से पश्चिम को जाते,
उत्तर से दक्षिण को जाते।
घूमघाम कर घर को आते,
अपनी माँ को बात सुनाते।
देख लिया हमने जग सारा,
अपना घर है सबसे प्यारा।

झंडा

तीन रंग का अपना झंडा,
हम झंडा फहराते हैं।
इसे तिरंगा कहते हैं हम ,
इसका गाना गाते हैं।
इसे देखते हैं जब हम सब,
कितने खुश हो जाते हैं।
इस झंडे को हम सब बच्चे,
अपना शीश झुकाते हैं।

अ

अनार

अ से अनार दानेदार
स्वाद है इसका मज़ेदार

आ

आम

आ से आम चूस ले राजा
कहते इसे फलों का राजा

इ

इमली

इ से इमली होती खट्टी
चीज़ें इससे बनती चटपटी

ई

ईख

ई से ईख रसीला प्यारा
चूसो इसका मीठा रस सारा

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

अ	अमरूद	अदरक	अजगर	अखरोट
आ	आरी	आग	आकाश	आरती
इ	इस्त्री	इनाम	इमारत	इलायची
ई	सुई	मिठाई	चटाई	भाई

अध्यापन निर्देश : पृष्ठ 9 से 18 तक हिंदी वर्णमाला दी गई है। अध्यापक वर्ण विशेष की पहचान करवाये और उसका उच्चारण सिखाये। चित्र देखकर वस्तु विशेष का नाम बताने को कहे। चित्र के नीचे लिखी काव्यमय तुकों को याद करवाये।

उ

उल्लू

उ से उल्लू दिनभर अंधा
करता रात को अपना धंधा

ऊ

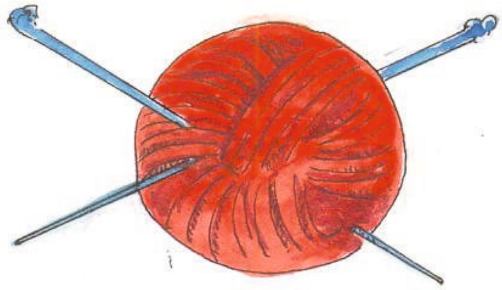

ऊन

ऊ से ऊन भेड़ से मिलती
सरदी सारी है हर लेती।

ऋ

ऋ से ऋषि बड़ा महान
सबको देता है वह ज्ञान

ए

एड़ी

ए से एड़ी पर घुँघरू बाजे
भजन गाती फिर मीरा नाचे

ऐ

ऐनक

ऐ से ऐनक तभी लगाते
जब हम ठीक से पढ़ न पाते

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

उ	उड़द	उबटन	उपला	उपज
ऊ	गऊ	ऊपर	बिकाऊ	ऊँट
ऋ	ऋतु	ऋषभ	ऋग्वेद	ऋचा
ए	एक	एकड़	एकलव्य	एकटक
ऐ	ऐरावत	ऐलान	ऐश	ऐसा

ओ

ओखली

ओ से ओखली बड़े काम की
इसमें मसाला पीसे जानकी

औ

औरत

औ से औरत बड़ी महान
पढ़े तो जग में बढ़े शान

अं

अंगूर

अं से अंगूर बड़े रसीले
हरे, काले और पीले-पीले

अः

अः

अः

अः से हाः हाः हाः हँसते रहो
खेलो, कूदो और पढ़ते रहो

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

ओ	ओस	ओम	ओला	ओढ़नी
औ	औज़ार	औलाद	औषधि	और
अं	अंगूठा	अंडा	अंजीर	अंगुलि
अः	प्रातः	प्रात:काल	अतः	दु:ख

क

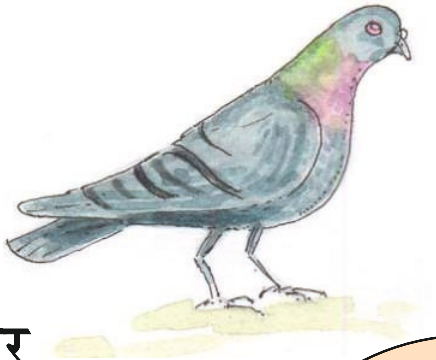

कबूतर

क से कबूतर उड़ता जाता
शाँति का यह दूत कहलाता

ख

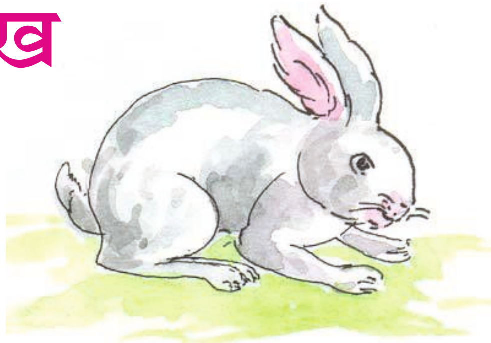

खरगोश

ख से खरगोश घास है चरता
हल्की आहट से भी डरता

ङ

ग

गमला

ग से गमला फूलों से भरा
घर को रखता हरा-भरा

घ

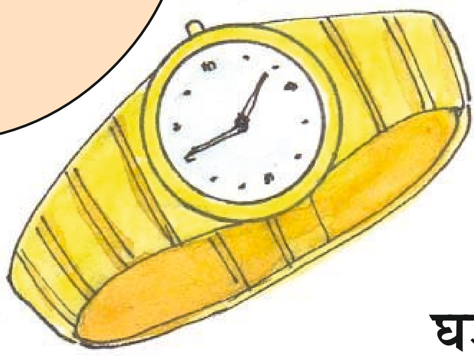

घड़ी

घ से घड़ी टिक-टिक करती
हरदम आगे बढ़ती रहती

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

क	कमल	कलम	ककड़ी	कलाई
ख	खरबूज़ा	खजूर	खत	खसखस
ग	गणेश	गाजर	गलीचा	गधा
घ	घर	घड़ा	घुटना	घास

च

चंदा

च से चंदा मामा न्यारा
बच्चों को यह लगता प्यारा

छ

छतरी

छ से छतरी बड़ी मनभाती
वर्षा, धूप से हमें बचाती

अ

ज

जग

ज से जग भर लो पानी
प्यास लगे तो पी ले रानी

झ

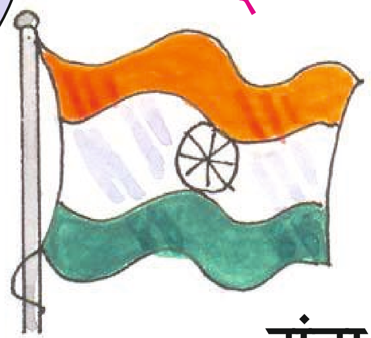

झंडा

झ से झंडा देश की शान
बच्चो ! रखना इसका मान

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

च	चकला	चटाई	चपाती	चाबी
छ	छत	छड़ी	छाछ	छत्ता
ज	जल	जहाज़	जाल	जानवर
झ	झूला	झरना	झाड़ी	झाड़ू

ट

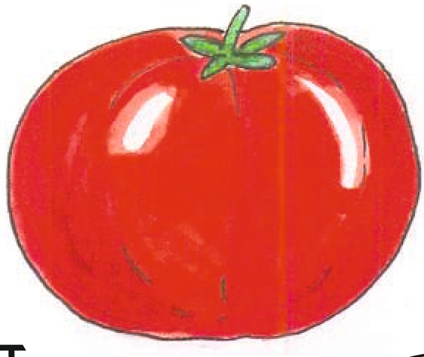

टमाटर

ट से टमाटर रंग है लाल
इससे सब्ज़ी बने कमाल

ठ

ठठेरा

ठ से ठठेरा ठक्-ठक् करता
बढ़िया-बढ़िया बरतन घड़ता

ण

ड

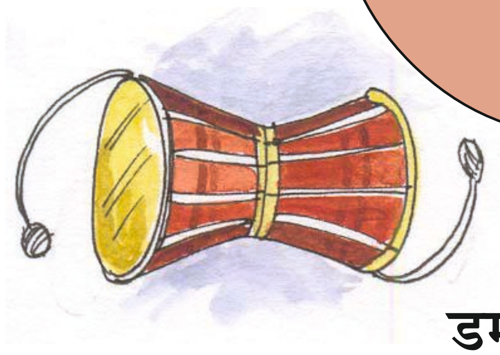

डमरू

ड से डमरू डम-डम बाजे
ठुमक-ठुमक बंदरिया नाचे

ढ

ढक्कन

ढ से ढक्कन बरतन पर लगाओ
भोजन को मक्खियों से बचाओ

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

ट	टब	टहनी	टाट	टोकरी
ठ	ठोड़ी	ठेला	ठोस	ठोकर
ड	डाल	डंडा	डाक	डफली
ढ	ढाल	ढोल	ढोलक	ढोलकी

त

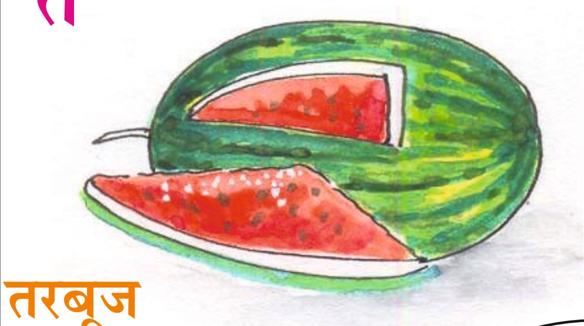

तरबूज

त से तरबूज लाल ही लाल
खाओ मिलकर बाल गोपाल

थ

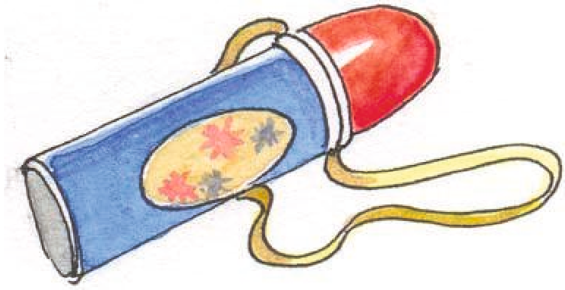

थरमस

थ से थरमस आता काम
ठंडे गरम का देता आराम

न

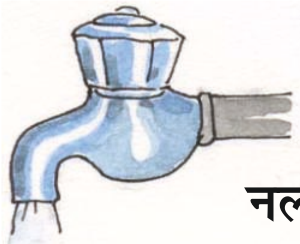

नल

न से नल देता है पानी
प्यास बुझाये जिससे रानी

द

दरज़ी

द से दरज़ी मशीन चलाता
कपड़ों को है सिलता जाता

ध

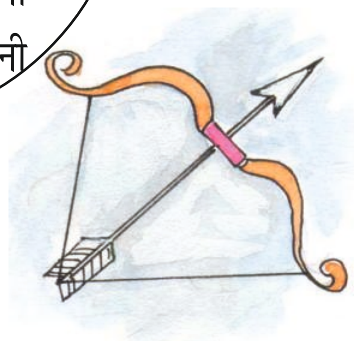

धनुष

ध से धनुष पर तीर चढ़ाया
राम ने रावण को मार गिराया

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

त	तलवार	तोता	तकिया	तराजू
थ	थन	थाल	थाली	थर्मामीटर
द	दाल	दही	दराज	दरवाज़ा
ध	धड़	धागा	धरती	धोबी
न	नमक	नदी	नग	नगर

प

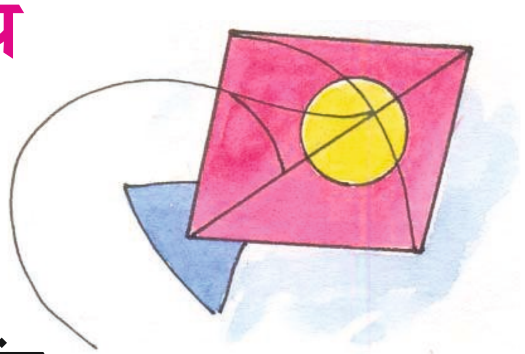

पतंग

प से पतंग हवा में उड़ती
आसमान से बातें करती

फ

फल

फ से फल खूब खाओ
बच्चो ! अपनी सेहत बनाओ

म

मछली

म से मछली जल की रानी
मर जाती जब मिले न पानी

ब

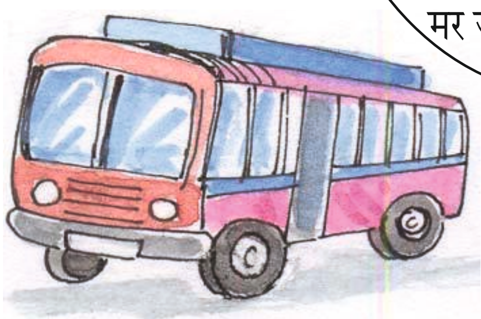

बस

ब से बस चलती जाये
सबको मंज़िल पर पहुँचाये

भ

भालू

भ से भालू नाच दिखाये
बच्चों का वह मन बहलाये

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

प	पवन	पानी	पहाड़	पहिया
फ	फूल	फ़सल	फौजी	फाटक
ब	बतख	बकरी	बटन	बरतन
भ	भाई	भालू	भगत	भगवान
म	महल	मटर	माता	मशीन

य

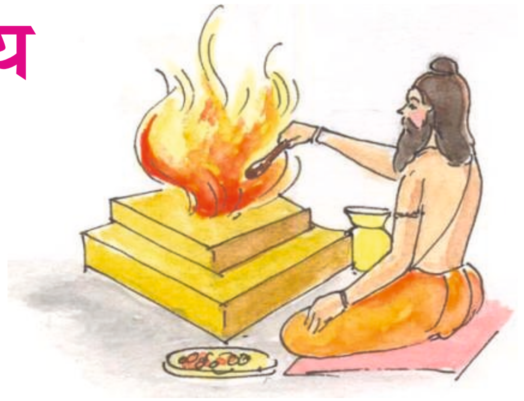

यज्ञ

य से यज्ञ सभी करवाओ
वातावरण को पवित्र बनाओ

र

रथ

र से रथ पर होकर सवार
महल से निकला राजकुमार

ल

लड़का

ल से लड़का स्कूल में पढ़ता
कलम से सुंदर अक्षर लिखता

व

वर्षा

व से वर्षा जब भी आये
बच्चे उसमें खूब नहायें

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

य	यात्री	यशोदा	यान	यमुना
र	रबड़	रसोई	राजा	रात
ल	लहू	लता	लकड़ी	लड़की
व	वन	वट	वधू	वकील

श

शलगम

श से शलगम जो भी खाये
सेहत उसकी बनती जाये

ष

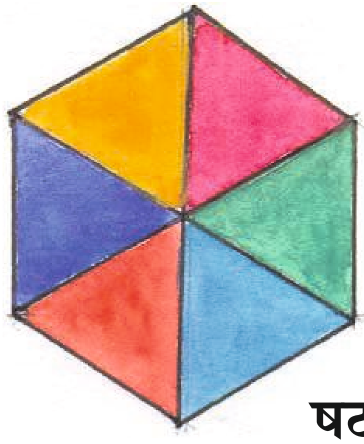

षटकोण

ष से षटकोण प्यारा–प्यारा
छह कोणों का मेल है न्यारा

स

सपेरा

स से सपेरा बीन बजाता
नागिन को वश कर ले जाता

ह

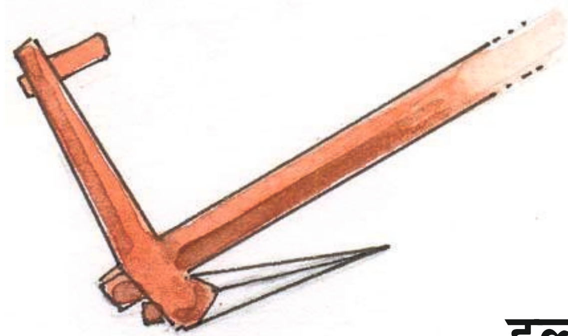

हल

ह से हल ले चला किसान
छोड़ आलस नित करता काम

इन शब्दों में से अक्षर विशेष की पहचान करो :

श	शहर	शहद	शरबत	शहतूत
ष	वर्षा	कृषक	विशेष	भाषण
स	सड़क	सच	सरिता	सरसों
ह	हवा	हलवा	हलवाई	हरा

मानक हिंदी वर्णमाला

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ	कोई मात्रा नहीं	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

व्यंजन :	**कवर्ग**	**क**	**ख**	**ग**	**घ**	**ङ**
	चवर्ग	**च**	**छ**	**ज**	**झ**	**ञ**
	टवर्ग	**ट**	**ठ**	**ड**	**ढ**	**ण**
	तवर्ग	**त**	**थ**	**द**	**ध**	**न**
	पवर्ग	**प**	**फ**	**ब**	**भ**	**म**
		य	**र**	**ल**	**व**	
		श	**ष**	**स**	**ह**	
		ड़	**ढ़**			

इस तरह हिंदी वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर तथा 35 व्यंजन हैं।

अनुस्वार : ं (अं)

अनुनासिक चिह्न : ँ

विसर्ग : ः (अः)

हल् चिह्न : (्)

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर हिंदी वर्णमाला दी गई है। अध्यापक बच्चों को पूर्व ज्ञान के आधार पर पहचान करवाये और उन्हें बताये कि 'ङ', 'ञ', 'ण' वर्णों से कोई शब्द शुरू नहीं होता। 'ड़', 'ढ़' ध्वनियाँ 'ड', 'ढ' का विकसित रूप हैं। इन ध्वनियों से भी कोई शब्द शुरू नहीं होता। ये शब्द के मध्य या अंत में आती हैं। प्रायः देखा गया है कि बच्चे किसी भी वर्ग के चौथे वर्ण (घ, झ, ढ, ध, भ) का उच्चारण तीसरे वर्ण (ग, ज, ड, द, ब) के समान करते हैं। अध्यापक ध्यान दे कि चौथे वर्ण के उच्चारण के अंत में 'ह' की ध्वनि उच्चरित होती है। हल् चिह्न (्) के बारे में अध्यापक बच्चों को बताये कि यह चिह्न प्रत्येक आधे व्यंजन के नीचे लगाया जाता है।

घ र छ त

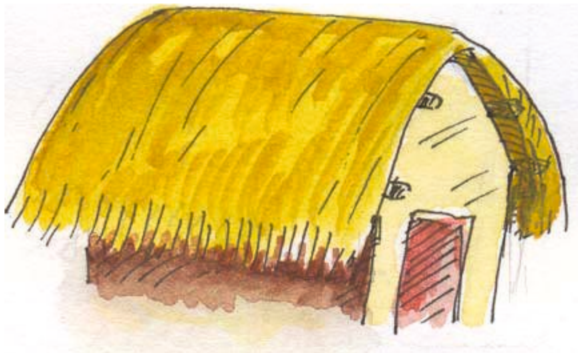

घ र **घर** **छ त** **छत**

पहचानो : घ र छ त

पढ़ो : घर छत

समझो : घ् + अ = घ र् + अ = र

छ् + अ = छ त् + अ = त

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

घ

र

छ

त

खाली स्थान भरो :

घ -- **छ** --

-- **त** -- **र**

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। वर्णों को जोड़कर पूरा शब्द पढ़वाये। 'समझो' शीर्षक के अंतर्गत वर्णों के नीचे लगे हल् चिह्न (तिरछे निशान) के बारे में बताये कि सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला रहता है। 'अ' स्वर के बिना व्यंजन का रूप आधा होता है जैसे घ् + अ = घ । पृष्ठ पर दिये वर्णों को क्रम से लिखना सिखाये और खाली स्थान भरवाये।

देवनागरी लिपि के 'र, छ, त' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਰ, ਛ, ਤ' जैसा होता है। हिंदी में 'घ' और 'ਘ' के उच्चारण में अंतर बताते हुए बताये कि हिंदी में 'घ' का उच्चारण करते समय मुँह से अंत में 'ह' की ध्वनि निकलती है जबकि पंजाबी में 'ਘ' का उच्चारण करते समय 'अ' की ध्वनि निकलती है।

ब स ड़ क

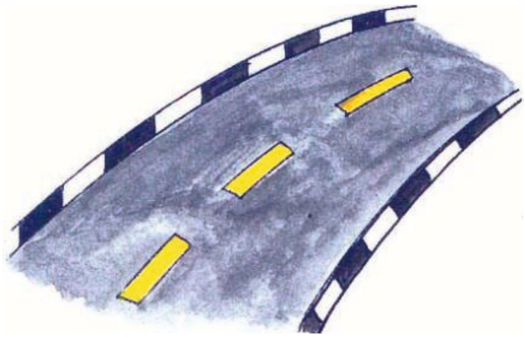

ब स **बस** **स ड़ क** **सड़क**

पहचानो : ब स स ड़ क

पढ़ो : बस सड़क

समझो : ब् + अ = ब स् + अ = स

ड़् + अ = ड़ क् + अ = क

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ब

स

ड़

क

खाली स्थान भरो :

ब	--	--	**ड़**	--
--	**स**	**स**	--	**क**

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। पूरा शब्द पढ़वाये, क्रम से लिखना सिखाये। खाली स्थान भरवाये। वर्णों को पृथक् करके लिखना सिखाये, जैसे :- ब् + अ + स् + अ = बस।

देवनागरी लिपि के 'ब, स, ड़, क' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਬ, ਸ, ੜ, ਕ' जैसा होता है।

ट द म अ

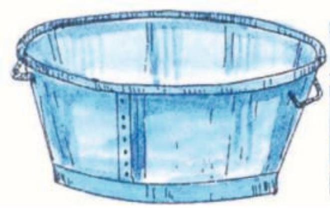

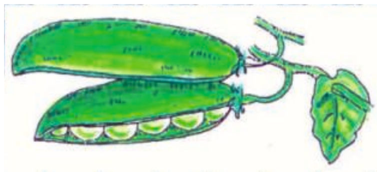

ट ब टब **म ट र मटर**

10

द स दस **अ द र क अदरक**

पहचानो	:	ट	द	म	अ
पढ़ो	:	टब	दस	मटर	अदरक
समझो	:	ट् + अ = ट		द् + अ = द	
		म् + अ = म			

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ट ट

द द

म म

अ अ

खाली स्थान भरो :

-- ब म -- र -- स

ट -- म ट -- अ -- र --

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। पूरा शब्द पढ़वाये, क्रम से लिखना सिखाये। खाली स्थान भरवाये तथा वर्णों को अलग-अलग करना सिखाये। 'अदरक' शब्द 'अ' स्वर के लिए है। इस शब्द में आए अन्य वर्ण बच्चे सीख चुके हैं।

देवनागरी लिपि के 'ट', 'द', 'म', 'अ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਟ', 'ਦ', 'ਮ', 'ਅ' जैसा होता है।

न ल थ आ

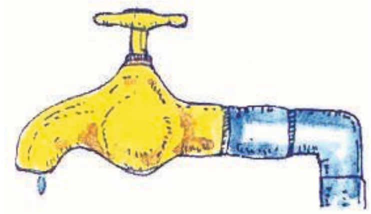

न ल नल

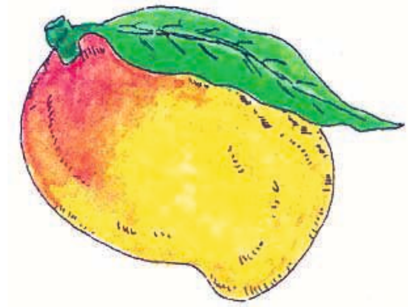

आ म आम

न थ नथ

पहचानो : न ल थ आ

पढ़ो : नल नथ आम

समझो : न् + अ = न ल् + अ = ल

थ् + अ = थ अ + अ = आ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

न

ल

थ

आ

खाली स्थान भरो :

न -- -- थ -- ाम

-- ल न -- आ --

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। पूरा शब्द पढ़वाये, क्रम से लिखना सिखाये। 'थ' के लिखने में घुंडी और शिरोरेखा पर विशेष ध्यान दे। 'आम' शब्द 'आ' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'न', 'ल', 'थ', 'आ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਨ', 'ਲ', 'ਥ', 'ਆ' जैसा होता है।

‘आ’ की मात्रा ‘ा’ का ज्ञान ा

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

————————

————————

————————

————————

————————

————————

————————

————————

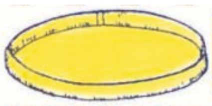

————————

————————

छाता
माला
नाक
आम
कान
घड़ा
थाल
ताला
कार
बालक

समझकर पूरा करो :

अ	+	अ	=	आ	त्	+	आ	=	----
न्	+	आ	=	ना	थ्	+	आ	=	----
म्	+	आ	=	----	क्	+	आ	=	----
ल्	+	आ	=	----	ड़्	+	आ	=	----
छ्	+	आ	=	----	ब्	+	आ	=	----

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘आ’ की मात्रा ‘ा’ का ज्ञान करवाया गया है। अध्यापक बच्चों को बताये कि ‘अ’ स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। यह सभी व्यंजनों में मिला होता है। पिछले पाठों से उदाहरण देकर समझाये। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर ‘आ’ की मात्रा ‘ा’ का अभ्यास करवाये। कई शब्दों जैसे नथ-नाथ, कर-कार, थल-थाल आदि का उच्चारण करवाकर ‘अ-आ’ में अंतर स्पष्ट करे।

यह भी बताया जाये कि ‘आ’ की मात्रा को ही गुरुमुखी लिपि में ‘ਕੰਨਾ’ (ਾ) कहते हैं। अंतर यह है कि ‘आ’ की मात्रा ‘ा’ पूरी लगती है और ‘ਕੰਨਾ’ (ਾ) हिंदी की ‘आ’ की मात्रा ‘ा’ से थोड़ा छोटा लगता है।

ख ग ज इ

खा ना **खाना** ग र द न **गरदन**

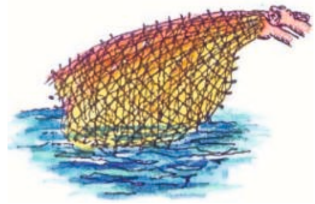

जा ल **जाल** इ क ता रा **इकतारा**

पहचानो : ख ग ज इ

पढ़ो : खाना गरदन जाल इकतारा

समझो : ख् + आ = खा ग् + आ = गा

ज् + आ = जा

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ख

ग

ज

इ

खाली स्थान भरो :

खा -- ा **-- ाल** **-- र -- न**

इ -- ा रा

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। पूरा शब्द पढ़वाये, क्रम से लिखना सिखाये। 'ख' के लिखने में विशेष ध्यान दे। बच्चे 'ख' को नीचे से जोड़कर लिखें। पूर्व सीखे वर्णों के साथ 'आ' की मात्रा 'ा' लगाकर अभ्यास ,रवाये। 'इकतारा' शब्द 'इ' स्वर के लिए है।

देवागरी पि के 'ख', 'ग', 'ज', 'इ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਖ', 'ਗ', 'ਜ', 'ੲ' जैसा होता है। स्मरण रहे कि हिंदी में स्वरों के साथ मात्राएँ नहीं लगतीं जबकि पंजाबी में स्वरों के साथ प्राय: मात्राएँ लगती हैं। जैसे कि ऊपर आये 'इकतारा' शब्द को पंजाबी में 'ਇਕਤਾਰਾ' लिखते समय 'ੲ' में ਸਿਹਾਰੀ ' ਿ ' लगती है।

'इ' की मात्रा ' ि ' का ज्ञान ि

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

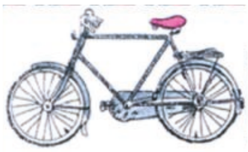

किताब
गिलास
टिकट
निब
साइकिल
सितार
किसान
सरिता
दिल
गिटार

समझकर पूरा करो :

क्	+	इ	=	कि	स्	+	इ	=	----
ग्	+	इ	=	----	र्	+	इ	=	----
ट्	+	इ	=	----	द्	+	इ	=	----
न्	+	इ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'इ' की मात्रा ' ि ' का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर अध्यापक 'इ' की मात्रा ' ि ' का ज्ञान करवाये। पूर्व सीखे वर्णों के साथ 'इ' की मात्रा ' ि ' लगाकर अभ्यास करवाये।

देवनागरी लिपि में 'इ' की मात्रा ' ि ' को ही गुरुमुखी लिपि में ਸਿਹਾਰੀ ' ਿ ' कहा जाता है। 'इ' की मात्रा ' ि ' हमेशा अक्षर से पूर्व लगती है।

च प य ई

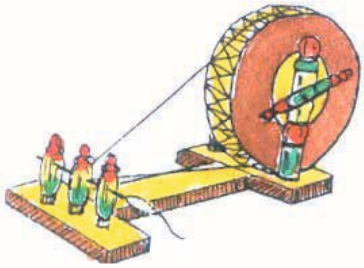

च र खा **चरखा**

या न **यान**

पा ल ना **पालना**

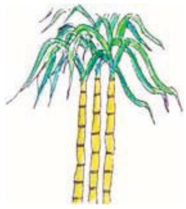

ई ख **ईख**

पहचानो	:	च	प	य	ई
पढ़ो	:	चरखा	पालना	यान	ईख
समझो	:	च् + अ = च		प् + अ = प	
		य् + अ = य		इ + इ = ई	

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

च च

प प

य य

इ इ ई

खाली स्थान भरो :

च -- खा   पा -- ना   -- ान   ई --

-- र खा   -- ल ना   या --   -- ख

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। बच्चों को समझाकर पढ़ाया जाये। 'ईख' शब्द 'ई' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'च','प','य','ई' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਚ', 'ਪ', 'ਯ', 'ਈ' के समान होता है।

'ई' की मात्रा ' ी ' का ज्ञान ी

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

— — — — — —

— — — — — —

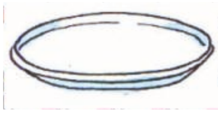

— — — — — —

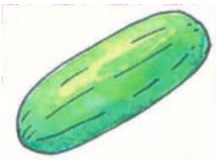

— — — — — —

— — — — — —

किकली
तितली
खीरा
चीता
थाली
लीची
बकरी
आरी
घड़ी
पीपल

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

समझकर पूरा करो :

इ	+	इ	=	ई	प्	+	ई	=	----
ल्	+	ई	=	ली	र्	+	ई	=	----
ड़्	+	ई	=	----	च्	+	ई	=	----
ख्	+	ई	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ई' की मात्रा 'ी ' का ज्ञान करवाया गया है। अध्यापक ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर 'ई' की मात्रा 'ी' का अभ्यास करवाये। पूर्व पढ़े हुए व्यंजनों के साथ 'ई' की मात्रा 'ी' लगाकर उच्चारण करवाये। अब बच्चे इ (ि) और ई (ी) की मात्राएँ सीख चुके हैं। कई शब्दों जैसे मिल-मील, सिल-सील, छिल-छील आदि का बार-बार उच्चारण करवाकर दोनों मात्राओं का अंतर स्पष्ट करे।
देवनागरी लिपि में 'ई' की मात्रा 'ी' को गुरुमुखी लिपि में ਬਿਹਾਰੀ ' ੀ ' कहा जाता है। यह अक्षर के बाद लगती है।

ध ह उ

धा गा **धागा**

उ प ला **उपला**

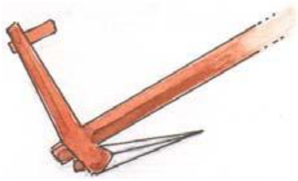

ह ल **हल**

पहचानो	:	ध	ह	उ
पढ़ो	:	धागा	हल	उपला
समझो	:	ध् + अ = ध	ह् + अ = ह	

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ध ध

ह ह

उ उ

खाली स्थान भरो :

उ -- ला **--ा गा** **-- ल**

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करते हुए उनके नाम बुलवाकर वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। 'घ' और 'ध' के उच्चारण और लिखने में जो अंतर है, वह स्पष्ट करे। 'ध' वर्ण लिखने में घुंडी की ओर विशेष ध्यान दिलाये तथा इस पर लगने वाली शिरोरेखा पर ध्यान दे। बच्चे 'ड़' लिखना सीख चुके हैं। 'ड़' की सहायता से 'ह' वर्ण लिखना सिखाये। 'उपला' शब्द 'उ' स्वर के लिये है।

देवनागरी लिपि के 'ह' और 'उ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਹ' और 'ਉ' के समान है। 'ध' और गुरुमुखी लिपि के 'ਧ' के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करते हुए बताया जाये कि हिन्दी में 'ध' का उच्चारण करते समय मुँह से अंत में 'ह' जैसी ध्वनि निकलती है। जबकि पंजाबी में 'ਧ' का उच्चारण करते समय मुँह से अंत में 'अ' जैसी ध्वनि निकलती है।

‘उ’ की मात्रा ‘ ु ’ का ज्ञान ु

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

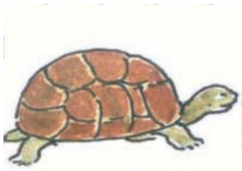

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _

साबुन
कछुआ
जुराब
सुराही
रुपया
खुरपा
गुड़िया
जामुन
चुहिया
बुलबुल

समझकर पूरा करो :

ग्	+	उ	=	गु	च्	+	उ	=	----
स्	+	उ	=	----	र्	+	उ	=	----
छ्	+	उ	=	----	ख्	+	उ	=	----
ब्	+	उ	=	----	म्	+	उ	=	----
ज्	+	उ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘उ’ की मात्रा ‘ ु’ का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर अध्यापक ‘उ’ की मात्रा का अभ्यास करवाये। पूर्व सीखे वर्णों के साथ ‘उ’ की मात्रा ‘ ु’ लगाकर अभ्यास करवाये। ‘र्’ में ‘उ’ की मात्रा लगाने का सही स्थान बताये जैसे ‘र्’+ ु = रु ।

देवनागरी लिपि में ‘उ’ की मात्रा ‘ ु’ को गुरुमुखी लिपि में ਔਂਕੜ ‘ ੁ ’ कहा जाता है। पंजाबी में ‘ਰ’ में ਔਂਕੜ ‘ਰ’ के नीचे लगता है। जैसे ਰੁਪਿਆ।

झ ड श ऊ

झ र ना **झरना**

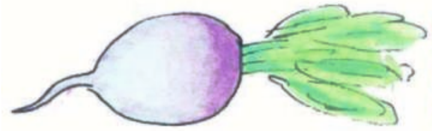

श ल ग म **शलगम**

ड लि या **डलिया**

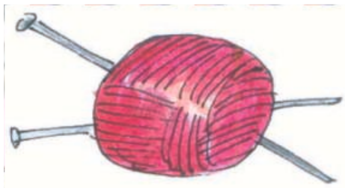

ऊ न **ऊन**

पहचानो : झ ड श ऊ

पढ़ो : झरना डलिया शलगम ऊन

समझो :

झ् + अ = झ ड् + अ = ड

श् + अ = श उ + उ = ऊ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

८	इ	झ्	झ	झ
		'	ड	ड
	१	श्	श।	श
	२	३	ऊ	ऊ

खाली स्थान भरो :

झ -- ना ड ि-- या श -- ग म ऊ --

-- र ना -- लि -- -- ल -- म -- न

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। 'झ' लिखने में 'इ' की सहायता ली जा सकती है। बच्चे 'ड़' लिखना सीख चुके हैं। इसलिए 'ड' लिखने में कोई कठिनाई नहीं होगी। 'ड' और 'ड़' का कई बार उच्चारण करवाकर इन दोनों वर्णों का अंतर स्पष्ट करे। 'ऊन' शब्द 'ऊ' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'ड, श' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਡ, ਸ਼' के समान है। 'झ' का उच्चारण गुरुमुखी के 'ਝ' से भिन्न है। उच्चारण में भिन्नता स्पष्ट करते हुए बताये कि हिंदी में 'झ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'ह' जैसी ध्वनि निकलती है जबकि पंजाबी में 'ਝ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'अ' जैसी ध्वनि निकलती है।

'ऊ' की मात्रा 'ू' का ज्ञान ੂ

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

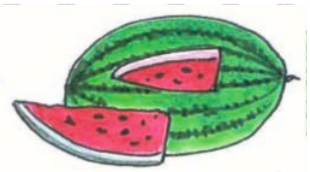

— — — — — —

— — — — — —

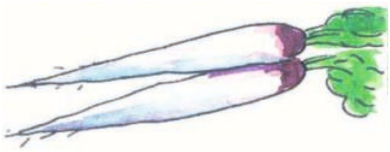

— — — — — —

— — — — — —

— — — — — —

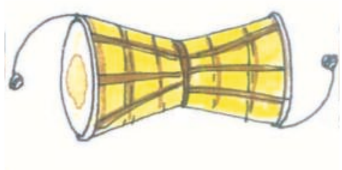

— — — — — —

तरबूज
कबूतर
खरबूजा
चाकू
खजूर
झूला
तराजू
मूली
डमरू
सूरज

समझकर पूरा करो :

उ	+	उ	=	ऊ	झ्	+	ऊ	=	----
ब्	+	ऊ	=	----	क्	+	ऊ	=	----
ज्	+	ऊ	=	----	स्	+	ऊ	=	----
म्	+	ऊ	=	----	र्	+	ऊ	=	----

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऊ' की मात्रा 'ू' का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर अध्यापक 'ऊ' की मात्रा 'ू' का अभ्यास करवाये। 'उ' की मात्रा 'ु' बच्चे पिछले पाठ में सीख चुके हैं। कुछ शब्दों जैसे कुल-कूल, बुरा-बूरा, सुर-सूर, चुना-चूना आदि का बार-बार उच्चारण करवाकर 'उ' और 'ऊ' की मात्रा का अंतर स्पष्ट करे। 'र्' वर्ण में 'ऊ' की मात्रा 'ू' का स्थान तथा 'रु' और रू में अन्तर स्पष्ट करे।

देवनागरी लिपि के 'ऊ' की मात्रा 'ू' को गुरुमुखी लिपि में दुलैंवड़ 'ੂ' कहा जाता है।

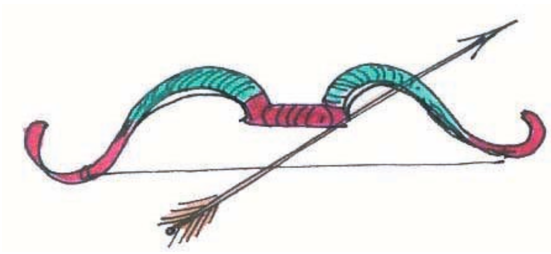

ष ठ ऋ

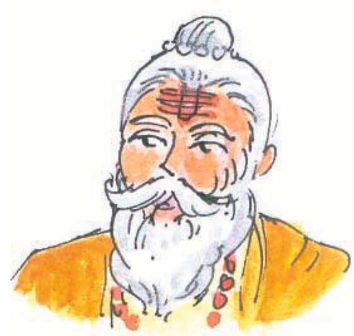

ध नु ष   धनुष

8

ऋ षि   ऋषि

आ ठ   आठ

पहचानो	:	ष	ठ	ऋ
पढ़ो	:	धनुष	आठ	ऋषि
समझो	:	ष् + अ = ष		ठ् + अ = ठ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ध ध ध ष

ठ ठ ठ

ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ

खाली स्थान भरो :

ध नु --   आ --   ऋ ि--

-- नु ष   -- ठ   -- षि

अध्यापन निर्देश: अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। 'ष' के उच्चारण में विशेष ध्यान दे। 'ष' का उच्चारण स्थान मूर्धा (तालु के ऊपर का भाग) है। बच्चे तालव्य 'श' का उच्चारण न करें। 'ऋषि' शब्द 'ऋ' स्वर के लिये है।

देवनागरी लिपि के 'ष, ठ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਸ਼' और 'ਠ' के समान है। 'ऋ' स्वर है। इसके लिए गुरुमुखी लिपि में 'ਰ' को ਸਿਹਾਰੀ 'ਿ' लगाकर लिखते हैं।

'ऋ' की मात्रा 'ृ' का ज्ञान ८

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

गृह
नृप
घृत
कृषक
कृषि
कृमि
अमृता
मृग

समझकर पूरा करो :

क्	+	ऋ	=	कृ	घ्	+	ऋ	=	----
ग्	+	ऋ	=	----	म्	+	ऋ	=	----
न्	+	ऋ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऋ' की मात्रा 'ृ' का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर अध्यापक 'ऋ' की मात्रा 'ृ' का अभ्यास करवाये। पूर्व सीखे वर्णों के साथ भी 'ऋ' की मात्रा 'ृ' लगाकर अभ्यास करवाये।

फ व ए

फ ल **फल**

ए ड़ी **एड़ी**

व क **वक**

पहचानो : फ व ए

पढ़ो : फल वक एड़ी

समझो : फ् + अ = फ व् + अ = व

अ + इ = ए

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

फ

व

ए

खाली स्थान भरो :

फ -- व -- -- ड़ी

-- ल -- क ए --ी

अध्यापन निर्देश: अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों में आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। बच्चे 'प' लिखना सीख चुके हैं। 'फ' लिखने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। इसी प्रकार 'ब' और 'र' लिखना सीख चुके हैं। 'ब' की सहायता से 'व' और 'र' की सहायता से 'ए' लिखना सिखाये। 'व' और 'ब' के उच्चारण में अंतर को कई शब्दों जैसे वन-बन, वट-बट, वार-बार के बार-बार उच्चारण से स्पष्ट करे। 'एड़ी' शब्द 'ए' स्वर के लिये है।

देवनागरी लिपि के 'फ', 'व' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਫ', 'ਵ' के समान है। 'ए' के लिए पंजाबी में किसी भी अक्षर के साथ 'ਲਾਂ (ੇ)' लगाकर 'ए' का उच्चारण होता है। जैसे :- ਕੇਲਾ-केला।

‘ए’ की मात्रा ‘े’ का ज्ञान ੇ

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

_ _ _ _ _ _

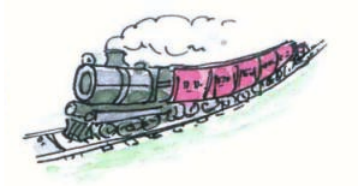
_ _ _ _ _ _

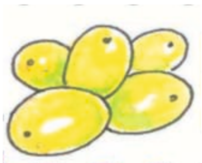
_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

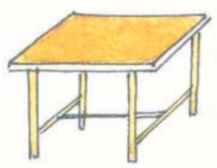
_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _

शेर
रेल
मेज़
सेब
बेर
केला
पेड़
ठेला
करेला
सपेरा

समझकर पूरा करो :

अ	+	इ	=	ए	श्	+	ए	=	----
स्	+	ए	=	से	र्	+	ए	=	----
ब्	+	ए	=	----	ठ्	+	ए	=	----
प्	+	ए	=	----	क्	+	ए	=	----
म्	+	ए	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘ए’ की मात्रा ‘े’ का ज्ञान करवाया गया है। अध्यापक ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर ‘ए’ की मात्रा ‘े’ का अभ्यास करवाये। पूर्व पढ़े हुए व्यंजनों के साथ ‘ए’ की मात्रा ‘े’ लगाकर उच्चारण करवाये।

देवनागरी लिपि की ‘ए’ की मात्रा ‘े’ और गुरुमुखी लिपि की ‘लां’ (ੇ) से बने शब्दों को दोनों भाषाओं में लिखवाकर अभ्यास करवाये। अध्यापक ‘ज’ और ‘ज़’ के अंतर को उदाहरणों द्वारा समझाये।

भ ऐ

भ व न   **भवन**

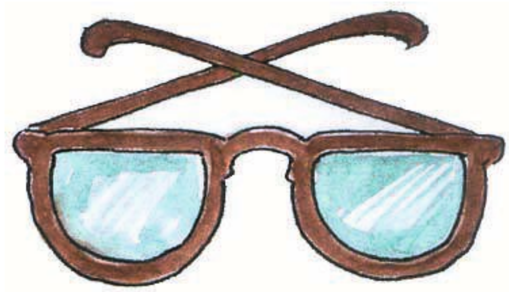

ऐ न क   **ऐनक**

पहचानो	:	भ	ऐ
पढ़ो	:	भवन	ऐनक
समझो	:	भ् + अ = भ	अ + ए = ऐ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

१   ५   भ   भ

े   ए   ए   ऐ

खाली स्थान भरो :

भ -- न   ऐ -- क

-- व न   -- न क

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। 'भ' वर्ण को लिखने में घुंडी और शिरोरेखा पर विशेष ध्यान दे। 'व', 'ब', 'भ' के उच्चारण में अंतर को कई शब्द बनाकर स्पष्ट किया जाये। 'ऐनक' शब्द 'ऐ' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'भ' और गुरुमुखी लिपि के 'ਭ' के उच्चारण में अन्तर स्पष्ट करते हुए बताये कि 'भ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'ह' जैसी ध्वनि निकलती है जबकि 'ਭ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'अ' जैसी ध्वनि निकलती है। 'ऐ' के लिए पंजाबी में किसी भी अक्षर के साथ 'ਦੁਲਾਂਵਾਂ (ੈ)' लगाकर 'ऐ' का उच्चारण होता है।

'ऐ' की मात्रा 'ै' का ज्ञान

ै

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

सैनिक
पैसा
बैल
पैर
बैलगाड़ी
कैदी
मैना
भैया
तैराक
गैया

समझकर पूरा करो :

अ	+	ऐ	=	ऐ	भ्	+	ऐ	=	----
ब्	+	ऐ	=	बै	क्	+	ऐ	=	----
प्	+	ऐ	=	----	त्	+	ऐ	=	----
स्	+	ऐ	=	----	ग्	+	ऐ	=	----
म्	+	ऐ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऐ' की मात्रा 'ै' का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर अध्यापक 'ऐ' की मात्रा 'ै' का अभ्यास करवाये। हिंदी में 'ऐ' का उच्चारण दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है। एक 'अए' के रूप में, दूसरा 'अइ' के रूप में। यदि 'ऐ' के बाद 'य' वर्ण आए तो इस ध्वनि का उच्चारण 'अइ' के रूप में मानक माना गया है। 'पैसा' और 'गैया' शब्द क्रमशः 'अए' और 'अइ' के उदाहरण हैं। 'ए' की मात्रा 'े' बच्चे सीख चुके हैं। कुछ शब्दों जैसे बेल-बैल, मेल-मैल, सेर-सैर, देव-दैव आदि का बार-बार उच्चारण करवाकर 'ए' और 'ऐ' की मात्रा का अन्तर स्पष्ट करे।

देवनागरी लिपि की 'ऐ' की मात्रा 'ै' और गुरुमुखी लिपि की 'दुलांवां (ੈ)' से बने शब्दों को दोनों भाषाओं में लिखवाकर अभ्यास करवाये।

ढ ओ

ढ क ना **ढकना** **ओ ख ली** **ओखली**

पहचानो	:	ढ	ओ
पढ़ो	:	ढकना	ओखली
समझो	:	द् + अ = ढ	अ + उ = ओ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

ऽ ढ ढ ढ

अ। अ‍ो ओ

खाली स्थान भरो :

ढ -- ना **ओ -- ली**

-- क ना **-- ख ी**

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। बच्चे 'ड' वर्ण लिखना सीख चुके हैं। 'ढ' वर्ण लिखने में 'ट' वर्ण की सहायता ले। 'ड' और 'ढ' के उच्चारण में अन्तर कई शब्दों जैसे डाल, डोरी, डमरू, डेरा, डलिया और ढोल, ढोलक, ढपली, ढमढम, ढीला आदि द्वारा स्पष्ट करे। 'ओखली' शब्द 'ओ' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'ढ' का उच्चारण गुरुमुखी लिपि के 'ਢ' से भिन्न है। उच्चारण में भिन्नता को स्पष्ट करते हुए बताये कि हिंदी में 'ढ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'ह' जैसी ध्वनि निकलती है जबकि पंजाबी में 'ਢ' के उच्चारण में मुँह से अंत में 'अ' जैसी ध्वनि निकलती है। 'ओ' ध्वनि के लिए पंजाबी में 'ਓ' का प्रयोग होता है।

‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ का ज्ञान ो

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

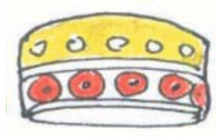

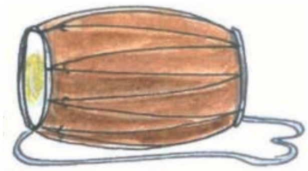

मोची
धोबी
टोकरी
टोपी
बोतल
तोता
घोड़ा
कोयल
ढोलक
कोट

समझकर पूरा करो :

अ	+	उ	=	ओ	ध्	+	ओ	=	----
घ्	+	ओ	=	घो	ट्	+	ओ	=	----
त्	+	ओ	=	----	ब्	+	ओ	=	----
क्	+	ओ	=	----	द्	+	ओ	=	----
म्	+	ओ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ का ज्ञान करवाया गया है। अध्यापक ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर ‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ का अभ्यास करवाये। पूर्व सीखे वर्णों के साथ भी ‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ लगाकर अभ्यास करवाये।

‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ के स्थान पर पंजाबी में ਹੋੜਾ ‘ੋ’ का प्रयोग होता है। दोनों भाषाओं में कुछ शब्दों को लिखवाकर ‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ और ਹੋੜਾ ‘ੋ’ का प्रयोग स्पष्ट करे। जैसे ਤੋਤਾ-तोता, ਟੋਪੀ-टोपी, ਕੋਟ-कोट आदि।

ढ़ औ

ब ढ़ ई बढ़ई

औ र त औरत

पहचानो : ढ़ औ

पढ़ो : बढ़ई औरत

समझो : ढ् + अ = ढ़ अ + ओ = औ

आओ ! अब इन्हें लिखना सीखें :

। ढ ढ ढ़

अा अो अौ औ

खाली स्थान भरो :

ब -- ई औ -- त

-- ढ़ ई -- र त

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करे। चित्रों के नाम बुलवाकर उनमें आये वर्णों का शुद्ध उच्चारण करवाये। अध्यापक बच्चों को बताये कि 'ढ़' वर्ण 'ढ' वर्ण का ही विकसित रूप है। यह वर्ण (ढ़) ड़ वर्ण की भाँति शब्द के मध्य या अंत में प्रयुक्त होता है जैसे चढ़ना, बाढ़ आदि। 'ढ़', 'ड़' वर्णों से कोई शब्द शुरू नहीं होता। 'औरत' शब्द 'औ' स्वर के लिए है।

देवनागरी लिपि के 'ढ़' के स्थान पर गुरुमुखी लिपि में प्राय: 'ੜ' का प्रयोग होता है। किंतु जहाँ भी 'ੜ' के साथ अन्त में 'ਹ' ध्वनि जैसा उच्चारण होता है। वहाँ 'ੜ' के नीचे 'ਹ' ध्वनि लगती है। जैसे 'ੜ੍ਹ'। उदाहरण चंडीगढ़ (देवनागरी) ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ (गुरुमुखी)। 'औ' के लिए पंजाबी में किसी भी अक्षर के साथ 'ਕਨੌੜਾ (ੌ)' लगाकर 'औ' का उच्चारण होता है।

‘औ’ की मात्रा ‘ौ’ का ज्ञान ौ

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

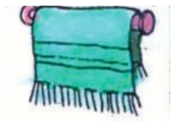

फौजी
लौकी
नौका
कौवा
पौधा
बौना
तौलिया
खिलौना
हथौड़ा
नौकर

समझकर पूरा करो :

अ	+	औ	=	औ	प्	+	औ	=	----
न्	+	औ	=	नौ	फ्	+	औ	=	----
त्	+	औ	=	----	क्	+	औ	=	----
ल्	+	औ	=	----	ब्	+	औ	=	----
थ्	+	औ	=	----					

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘औ’ की मात्रा ‘ ौ’ का ज्ञान करवाया गया है। ऊपर दिये गये चित्रों के नाम बुलवाकर ‘औ’ का मात्रा ‘ौ’ का अभ्यास करवाये। अब बच्चे ‘ओ’ और ‘औ’ दोनों स्वरों की मात्राएँ ‘ो’ और ‘ौ’ सीख चुके हैं। कई शब्दों जैसे ओर-और, कोड़ी-कौड़ी, लोटा-लौटा, शोक-शौक आदि का उच्चारण करवाकर इन दोनों मात्राओं का अभ्यास करवाये। ‘औ’ का उच्चारण दो तरह से होता है। एक तो जैसा ‘फौजी’ शब्द में हुआ है। दूसरा ‘अउ’ रूप में जैसा ‘कौवा’ शब्द में हुआ है। ‘औ’ के बाद ‘व’ वर्ण हो तो उसका उच्चारण ‘अउ’ की तरह किया जाता है।

‘औ’ की मात्रा ‘ौ’ के स्थान पर गुरुमुखी लिपि में वठॅंझा ‘ ੌ’ का प्रयोग होता है। कुछ शब्दों को दोनों भाषाओं में लिखवा कर ‘औ’ की मात्रा और वठॅंझा (ੌ) का अन्तर स्पष्ट करे।

अनुस्वार ‘अं’ का प्रयोग

ङ्		कङ्गन	कंगन
ञ्		मञ्जन	मंजन
ण्		झण्डा	झंडा
न्		बन्दर	बंदर
म्	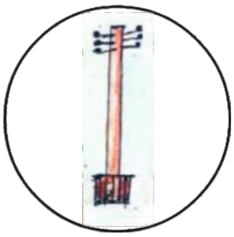	खम्भा	खंभा

अध्यापन निर्देश : अध्यापक श्यामपट्ट पर हिंदी वर्णमाला लिखे। कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के पाँचवें वर्ण (जो कि इस पृष्ठ पर ऊपर दिये गये हैं) की ओर संकेत करते हुए बताये कि इनमें से पहले तीन वर्णों (ङ्,ञ्, ण्) से कोई शब्द शुरू नहीं होता। ये वर्ण शब्द के मध्य या अंत में आते हैं। मानक दृष्टि से इन पाँच वर्णों के बाद यदि इनके वर्ग का कोई अन्य वर्ण आये तो पाँचवें वर्ण के स्थान पर अनुस्वार ‘ं’ का प्रयोग होता है। जैसे ‘कङ्गन’ शब्द में ‘ङ्’ के बाद ‘ग’ वर्ण कवर्ग से है। इसलिए ‘ङ्’ का सरलीकरण अनुस्वार (कंगन) के रूप में हो गया। अध्यापक अन्य वर्णों के बारे में ऊपर दिये गये चित्र देखकर समझाये।

अनुस्वार के लिए गुरुमुखी लिपि में ‘टिॅपी (ੰ)’ का प्रयोग होता है। अध्यापक दोनों भाषाओं के शब्दों के अभ्यास से इसका प्रयोग स्पष्ट करे।

अनुनासिक '-ँ' का प्रयोग

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें :

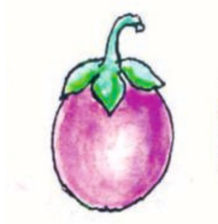

खुँबी
सूँड़
बिंदु
बैंगन
चाँद
होंठ
गेंद
आँख

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को बताये कि अनुनासिक ध्वनि (जिसमें हवा मुँह और नाक दोनों से निकले) के लिये चंद्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है। यह अपने से पूर्व आने वाले वर्ण के ऊपर प्रयोग होता है। छपाई आदि में सुविधा के लिए जिन स्वरों की मात्राएँ जैसे आ (ा), उ (ु), ऊ (ू) शिरोरेखा के ऊपर नहीं लगतीं, वहाँ चंद्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाये। परन्तु जिन स्वरों की मात्राएँ शिरोरेखा के ऊपर लगती हैं जैसे इ (ि), ई (ी), ए (े), ऐ (ै), ओ (ो), औ (ौ) के साथ अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जा सकता है। ऊपर दिये गये चित्रों के माध्यम से अध्यापक अनुनासिक का प्रयोग स्पष्ट करे।

अनुनासिक के स्थान पर गुरुमुखी लिपि में टिॅपी (ੰ) या बिंदी (ਂ) दोनों का प्रयोग होता है। अध्यापक कुछ शब्दों को दोनों भाषाओं में लिखवाकर इसका प्रयोग स्पष्ट करे। जैसे –चाँद-ਚੰਨ, गेंद-ਗੇਂਦ।

विसर्ग 'अः' का प्रयोग

ः

चित्र के नीचे उसका नाम लिखें

———————

दुःख
प्रातः
नमः

———————

———————

———————

अध्यापन निर्देश : अध्यापक दिये गये चित्रों पर बातचीत करते हुए बच्चों को विसर्ग का प्रयोग सिखाये। ये 'अः' के पीछे लगने वाले चिह्न दो बिन्दुओं (:) से बने शब्द हैं। इसका उच्चारण धीमे से 'ह' के समान है। गुरुमुखी लिपि में विसर्ग (:) का प्रयोग नहीं होता।

बनावट के आधार पर वर्णों की पहचान

उ	ऊ	अ	अं	अः	आ	ओ	औ
इ	ई	झ					
ट	ढ	ढ़	द	ठ			
ड	ड़	ङ	ह				
व	ब	क					
र	ए	ऐ	स	श	ख		
ग	म	भ					
प	ष	फ	च	ण			
न	ज	ञ	त	ऋ	ल		
य	थ						
घ	ध	छ					

मात्रा रहित शब्दों से वाक्य

अजय इधर आ ।

घर चल ।

झटपट चल।

नल पर जल भर।

छत पर मत चढ़।

नटखट मत बन।

सड़क पर मत चल।

एक ओर हट कर चल।

रमन बस आ गई।

आ बस पर चढ़।

बस ठहर गई।

अब उतर कर आ।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर शब्दों से बने वाक्य दिए गए हैं। अध्यापक बच्चों को इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये।

आगे के पृष्ठों पर वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इन्हें दोनों भाषाओं में लिखवाकर अभ्यास करवाये।

‘आ’ की मात्रा ‘ा’

आशा उठ।

नहाकर आग जला।

आग पर दाल चढ़ा।

दाल बनाकर चावल बना।

अब दाल चावल खा।

खाना खाकर आम खा।

कमला इधर आ।

मामा आया।

माला लाया।

बाजा लाया।

माला पहन ।

बाजा बजा।

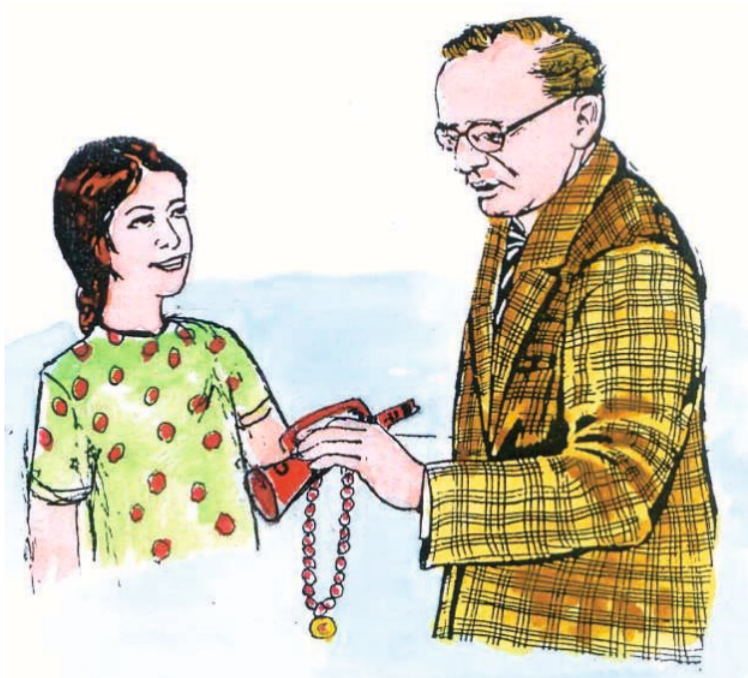

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘आ’ की मात्रा ‘ा’ वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये।

‘इ’ की मात्रा ‘ि’

किरण उठ।

दिन निकल आया।

चिड़िया जाग गई।

बिटिया आलस मत कर।

सिर मत हिला।

नहाकर पाठशाला जा।

दिन ढला।

रात घिर आई।

तारा दिखाई दिया।

दिया जला।

किताब पढ़।

पढ़ना–लिखना कितना भला।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘इ’ की मात्रा ‘ि’ वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्‌वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये।

‘ई’ की मात्रा ‘ ी’

दादी कहती –
हाथी एक राजा था।
नानी कहती –
चिड़िया एक रानी थी।
अब न रहा राजा।
न रही रानी
बस यही थी कहानी।

तितली आयी, तितली आयी
उड़ती–उड़ती तितली आयी।
लाल हरी नीली पीली
छटा दिखाती तितली आयी।
आजा रीना, आजा मीना
तितली आयी, तितली आयी।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘ई’ की मात्रा ‘ी’ वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। इ और ई की मात्राओं क्रमशः ‘ि’ ‘ी’ का अंतर उच्चारण द्वारा स्पष्ट करे।

‘उ’ की मात्रा ‘ ु ’

कुसुम सुन।

फुलवारी जा।

बुलबुल का गाना सुन।

रुक मत।

चुन-चुन कर गुलाब ला।

गुलाब की माला बना।

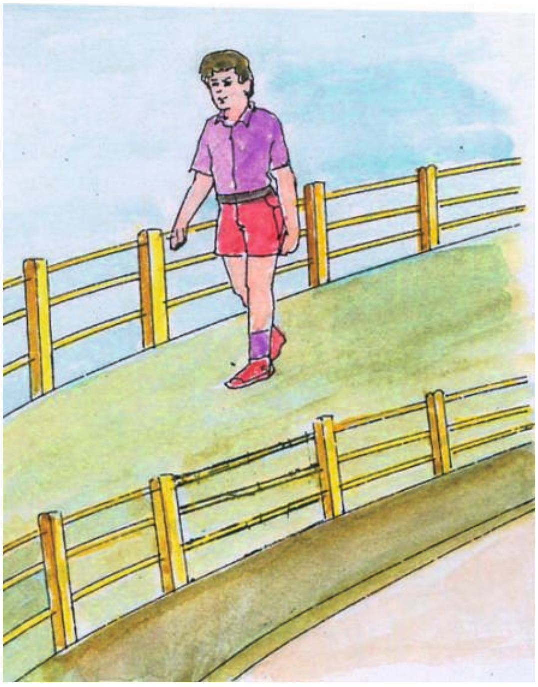

वरुण! अरुण को साथ ला।

पुल पर मत रुक।

साधु की सुराही उठा।

कुटिया तक जा।

लुटिया का जल पिला।

तुलसी पर जल चढ़ा।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘उ’ की मात्रा ‘ ु’ वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये, इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। ‘र्’ व्यंजन में ‘उ’ की मात्रा थोड़ी भिन्न रूप में लगती है। ‘र्’ में ‘उ’ की मात्रा उसके सामने लगती है, नीचे नहीं लगती, जैसा कि ऊपर ‘वरुण’ शब्द में ‘र्’ में ‘उ’ की मात्रा ‘र’ के सामने लगी है।

'ऊ' की मात्रा ' ू'

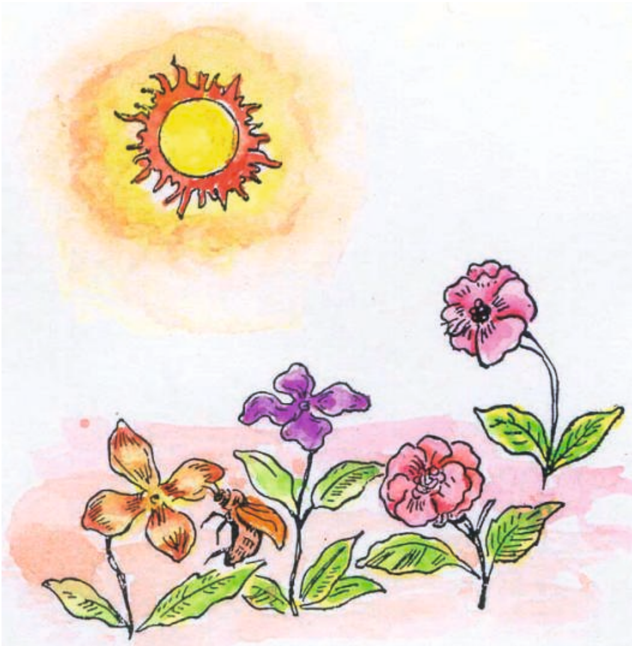

सूरज चमका।
फूल खिला।
धूप निकली ।
नीरू छत पर जा।
कबूतर आ।
दाना खा।

रूपम आ, झूला झूल।
मीनू आ, झूला झूल।
शालू आ, राजू आ।
सूट-बूट तू पहनकर आ।
झूला का गीत सुना।
झूम-झूम कर नाच दिखा।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऊ' की मात्रा ' ू' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। उ और 'ऊ' की मात्राओं क्रमश: ' ु ' ' ू' का अंतर उच्चारण द्वारा स्पष्ट करे। 'र्' में 'ऊ' की मात्रा ' ू' उसके सामने लगती है। जैसे कि ऊपर 'नीरू' और 'रूपम' शब्द में लगी है।

'ए' की मात्रा 'े'

देख, ये खेत।

चने के खेत।

देख, यह बेल।

करेले की बेल।

ये किसकी मेहनत के फल।

ये किसान की मेहनत के फल।

महेश, मेला देखने चल।

सुरेश, मेला देखने चल।

देख, मेला देख।

अरे! वह केले वाला।

केले वाले, केले दे।

चार केले दे।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ए' की मात्रा 'े' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्‌वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये।

'ऐ' की मात्रा 'ै'

कैलाश, थैला उठा।

पैदल बाज़ार जा।

पैसा लेकर सामान ला।

पैन ला, कैमरा ला।

पैन से मैना बना।

भैया के लिए बैग ला।

शैरेन देख।

हरी-हरी घास का मैदान।

घास पर चल।

जूते उतार, कर सैर।

ऐसी सैर नज़र की ख़ैर।

पैर साफ कर जूते पहन।

शब्दार्थ : ख़ैर= सलामती।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऐ' की मात्रा 'ै' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। 'ए' और 'ऐ' की मात्राओं क्रमश: 'े' 'ै' का अंतर उच्चारण द्वारा स्पष्ट करे।

‘ ओ ’ की मात्रा ‘ ो ’

देखो, कोयल है काली
पर मीठी है इसकी बोली।
इसने ही तो कूक-कूक कर
आमों में है मिसरी घोली।
पहले तोलो, फिर बोलो।
बोलो सबसे मीठी बोली।

मोहन आओ, सोहन आओ।
नाचो गाओ, खुशी मनाओ।
ढोल बजाकर गाना गाओ।
होली खेलो, टोली बनाओ।
हाथ धोकर खाना खाओ।
मात-पिता को शीश झुकाओ।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर ‘ओ’ की मात्रा ‘ो’ वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये।

'औ' की मात्रा 'ौ'

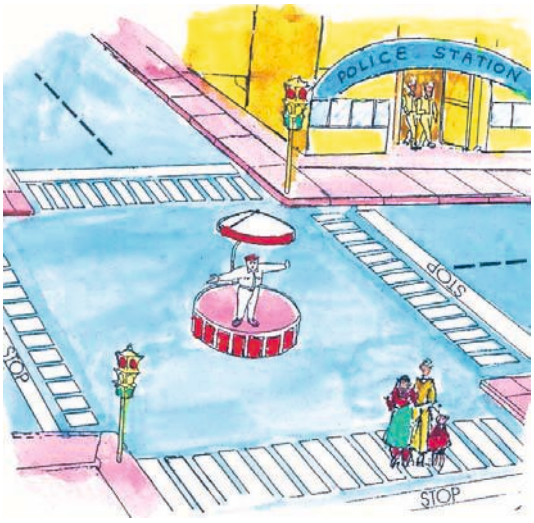

यह चौराहा है।

चौराहे के पास पुलिस चौकी है।

चौकी के बाहर पुलिस वाला तैनात है।

पुलिस वाले के पास एक फौजी आया है।

वह कलानौर शहर से आया है।

उसने फौज की वरदी पहनी है।

सिरमौर से मौसा और मौसी आये।

गौतम ने सबको पानी पिलाया।

मौसी गौरी के लिए खिलौना लाई।

मौसा ने गौतम को कागज़
की नौका बनाकर दी।

माता जी ने तौलिया दिया।

नौकर ने उनके लिए बिछौना बिछाया।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'औ' की मात्रा 'ौ' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्‌वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। 'ओ' और 'औ' की मात्राओं क्रमश: 'ो' 'ौ' का अंतर उच्चारण द्‌वारा स्पष्ट करे।

'ऋ' की मात्रा '◌ृ'

गरमी की ऋतु है।

ऋषि तृण से बनी कुटिया में बैठा है।

बाहर एक मृग चर रहा है।

एक नृप ऋषि के पास आया।

ऋषि ने कहा– किसी से घृणा मत करो।

वृथा झूठ मत बोलो।

यह मेरा गृह है।

भारत मेरी मातृभूमि है।

भगवान की हम सब पर कृपा है।

गाय का घृत अमृत के समान है।

हृदय से कृपालु बनो।

किसी से ऋण मत लो।

शब्दार्थ : तृण – तिनका; **मृग** –हिरन; **नृप**–राजा; **घृणा**–नफरत; **वृथा**– फिजूल, बेकार; **गृह** –घर; **घृत** –घी; **ऋण** –उधार लिया गया धन ; **कृपालु** – दयालु।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर 'ऋ' की मात्रा '◌ृ' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इनके द्वारा मात्रा की पहचान करवाये तथा इन्हें पढ़ना और लिखना सिखाये। 'ह्' वर्ण में 'ऋ' की मात्रा '◌ृ' का अभ्यास विशेष रूप से करवाया जाये, जैसे :- हृदय, हृष्ट।

अनुस्वार का प्रयोग '–̇'

आज मंगलवार है।

रंजीत मंदिर जाता है।

उसके हाथ में लाल रंग का झंडा है।

छत पर लंगूर बैठा अंगूर खा रहा है।

पंडित जी शंख बजा रहे हैं।

लोग घंटी बजा रहे हैं।

आज वसंत पंचमी है।

खेतों में पीली सरसों खिली है।

लोगों ने पीले रंग के कपड़े पहने हैं।

वे मीठे चावल खाते हैं।

बालक रंग-बिरंगी पतंगें उड़ाते हैं।

आकाश पतंगों से सुंदर लगता है।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर अनुस्वार '–̇' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अधिकतर बच्चे अनुस्वार के प्रयोग में गलती करते हैं। अध्यापक अनुस्वार चिह्न–' ˙' का सही स्थान पर प्रयोग करना सिखाये। पृष्ठ 43 पर अनुस्वार के प्रयोग संबंधी जानकारी बच्चों को दोहराई जाये।

अनुनासिक का प्रयोग ' ँ '

चाँद निकल आया है।

माँ आँगन में बैठी है।

गेहूँ की रोटी बना रही है।

चाँदनी, यहाँ मत बैठो, वहाँ बैठो।

हाथ-मुँह धोकर खाना खाओ।

सोने से पहले दाँत साफ करो।

आओ बेटा गाँव की सैर करें।

ऊँची जगह पर मत चढ़ो।

ज़ोर की आँधी चलने लगी है।

आँखों में धूल पड़ रही है।

माँ और आँटी की उँगली पकड़।

पाँव आगे बढ़ा और घर पहुँच।

अध्यापन निर्देश : इस पृष्ठ पर अनुनासिक ' ँ ' वाले शब्दों से बने वाक्य दिये गये हैं। अध्यापक इन शब्दों का बार-बार उच्चारण करके बच्चों को अंतर समझाये। अनुनासिक चिह्न ' ँ ' का सही स्थान पर प्रयोग करना सिखाये। पृष्ठ 44 पर अनुनासिक के प्रयोग संबंधी जानकारी बच्चों को दोहराई जाये।

विसर्ग का प्रयोग 'अः'

प्रातः छह बजे का समय है।

हम प्रायः नदी पर सैर करने जाते हैं।

प्रातः काल सैर करनी चाहिए।

थक गये हो, शनैः शनैः चलो।

अतः आराम कर लो।

किसी को दुःख न दो।

शब्दार्थ :

प्रायः– आमतौर पर; **शनैः–शनैः** = धीरे–धीरे; **प्रातःकाल** = सुबह का समय।

अध्यापन निर्देश : अध्यापक 'अः' का प्रयोग समझाते हुए बच्चों को बताये कि जिन शब्दों के पीछे या मध्य में दो बिंदु (:) लगे होते हैं, उन्हें विसर्ग (:) कहते हैं। ऐसे शब्दों के उच्चारण में अंत में 'ह' जैसी ध्वनि उच्चरित होती है। हिंदी में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम है, जिनमें विसर्ग (:) का प्रयोग होता है।